शिक्षा संकायः नियमावली एवं पाठ्यक्रम

पूर्वांचल में शिक्षण–प्रशिक्षण में रूचि रखने वाले युवको को नवीन शिक्षा प्रणाली को विभिन्न विधाओं से अभिज्ञ कराने के लिए महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में शिक्षा संकाय के गठन की आवश्यकता अनुभव की गयी। 1983 के सत्र में प्रायोगिक तौर पर बी0एड0 की कक्षायें प्रारम्भ की गयीं और अनेक वर्षों के अथक प्रयास के बाद सन् 1986–87 में पृथक शिक्षा संकाय की मान्यता उत्तर–प्रदेश सरकार द्वारा दी गई। तब से यह संकाय शिक्षा के क्षेत्र में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध स्तर पर अध्यापन कार्य कर रहा है और युवा पीढ़ी को शिक्षा को अपनी आजीविका बनाने हेतु प्रेरित कर अवसर प्रदान कर रहा है। इस बात पर बल दिया जा रहा है कि विद्यार्थी अध्यापन को एक वृत्ति के रूप में ग्रहण करें और देश की प्रगतिशील धारा से एकाकार होते हुए राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका निभायें।

1. बी0 एड0 कक्षा में प्रवेश के लिए एक परीक्षा होगी और प्रवेश परीक्षा के प्राप्तांको के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों को प्रवेश दिया जायेगा । प्रवेश परीक्षा के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर लिये गये निर्णय मान्य होंगे

2. वह अभ्यर्थी जिसने इस विश्वविद्यालय या भारत के किसी अन्य विश्वविद्यालय जिसे इस संस्था की कार्यकारिणी परिषद ने सन्निमित्त मान्यता प्रदान की है, से स्नातक या परास्नातक उपाधि प्राप्त की है, इस विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग में एक शिक्षा सत्र तक निर्धारित पाठ्यक्रम का नियमित अध्ययन कक्षा एवं ट्यूटोरियल में 75 प्रतिशत उपस्थिति के साथ किया है, प्रशिक्षण की अवधि में विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के किसी आचार्य, उपाचार्य या प्राध्यापक के निर्देशन में किसी मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय या इण्टरमीडिएट कालेज में कम से कम 40 पाठों का वास्तविक कक्षा शिक्षण किया है, जो समस्त अनिवार्य सत्रीय कार्यों को विधिवत् पूरा किया है। बी0 एड0 उपाधि के निमित्त परीक्षा में बैठ सकता है। प्रत्येक अभ्यर्थी को सैद्धान्तिक, प्रयोगात्मक एवं सत्रीय कार्यों में अनिवार्यतः भाग लेना होगा। सैद्धान्तिक पक्षों पर आयोजित व्याख्यानों में 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है जिसकी अधिसूचना विभागाध्यक्ष, विभाग की सुविधानुसार हर माह जारी कर सकता है।

3. यदि किसी प्रशिक्षणार्थी ने 40 पाठों का वास्तविक शिक्षण अभ्यास तथा अन्य अनिवार्य सत्रीय कार्यों को विधिवत् नहीं किया है तथा सत्रीय व्याख्यानों में 75 प्रतिशत उपस्थिति अर्जित नहीं किया है तो उसे बी0 एड0 की परीक्षा में सम्मिलित नहीं किया जायेगा ।

4. यदि कालान्तर में वह अभ्यर्थी तीन माह तक शुल्क देकर आकस्मिक छात्र के रूप में विद्यापीठ के बी0 एड0 की कक्षा में उपस्थित रहता है और पुनः 40 पाठों की वास्तविक कक्षा शिक्षण अभ्यास तथा अन्य निर्धारित सत्रीय कार्यों को पूरा करता है तो वह परीक्षा जिसमें वह सम्मिलित नहीं था, उससे दो क्रमागत वर्षों के भीतर किसी भी परवर्ती परीक्षा में बैठने की अनुमति उसे विभागाध्यक्ष की संस्तुति पर कुलपति से प्राप्त हो सकती है।

5. बी0 एड0 पाठ्यक्रम के अध्ययन काल में प्रशिक्षणार्थी कोई भी पूर्णकालिक या अंषकालिक कार्य जिसमें वेतन मिलने की व्यवस्था हो, स्वीकार नहीं कर सकता। इस प्रकार की सूचना मिलते ही किसी भी प्रशिक्षणार्थी का प्रवेश निरस्त कर दिया जायेगा।

बी0एड0 परीक्षा योजना

1. बी0 एड0 के प्रशिक्षणार्थी हिन्दी में या अंग्रेजी में भी प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं।

2. बी0 एड0 कक्षा में सैद्धान्तिक प्रश्नपत्रों का मूल्यांकन 600 अंकों में तथा प्रयोगात्मक कार्य का मूल्यांकन 300 अंको में होगा। सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक परीक्षाओं के लिए अलग–अलग श्रेणियां दी जायेंगी । प्रथम श्रेणी 60 प्रतिशत और उससे उपर, द्वितीय श्रेणी 48 प्रतिशत या उपर तथा शेष सभी छात्र तृतीय श्रेणी प्राप्त करेगें, यदि न्यूनतम् 36 प्रतिशत सम्पूर्णांक में तथा 30 प्रतिशत प्रत्येक प्रश्नपत्र में प्राप्त करेगें।

3. प्रायोगगिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी 60 प्रतिशत या उससे उपर, द्वितीय श्रेणी में 48 प्रतिशत या उससे अधिक और तृतीय श्रेणी 40 प्रतिशत या उससे अधिक प्राप्तांक पर दी जायेगी।

4. बी0 एड0 परीक्षा हेतु अधोलिखित पाठ्यक्रम नियत हैः

सैद्धान्तिक परीक्षा के पाठ्यक्रम में अधोलिखित प्रश्नपत्र नियत हैं–

अनिवार्य प्रश्न पत्र

प्रथम प्रश्नपत्रः	शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार	100
द्वितीय प्रश्नपत्रः	शिक्षा मनोविज्ञान	100
तृतीय प्रश्नपत्रः	शैक्षिक मूल्यांकन एवं क्रियात्मक अनुसंधान	100
चतुर्थ प्रश्नपत्रः	शैक्षिक तकनीकी एवं कम्प्यूटर सहअनुदेशन	100

वैकल्पिक प्रश्न पत्र

पंचम प्रश्नपत्रः	अधोलिखित प्रश्नपत्रों में से कोई एक करने होगें–	
1.	शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श	100
2.	भारतीय सन्दर्भ में पर्यावरण शिक्षा	100
3.	भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें	100
4.	शिक्षा एवं नागरिक सुरक्षा	100

षष्ठ एवं सप्तम प्रश्नपत्रः निम्नलिखित संवर्गों में से किन्हीं दो शिक्षण विषयों का चयन करना है जिसमें एक सवंर्ग से केवल एक ही विषय का चयन करना है।

संवर्ग क	1. संस्कृत शिक्षण	50
	2. हिन्दी शिक्षण	50
	3. अंग्रेजी शिक्षण	50
संवर्ग ख	1. इतिहास शिक्षण	50
	2. भूगोल शिक्षण	50
	3. नागरिक शास्त्र शिक्षण	50
	4. अर्थशास्त्र शिक्षण	50
संवर्ग ग	1. वाणिज्य शिक्षण	50
	2. सामान्य विज्ञान शिक्षण	50
	3. गृह विज्ञान शिक्षण	50
संवर्ग घ	1. जीवविज्ञान शिक्षण	50
	2. गणित शिक्षण	50

व्यवहार प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रयोगात्मक कार्य एवं शिक्षणाभ्यास का प्रावधान है जिसके लिए 300 अंक नियत हैं। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को किसी विषय के व्याख्याता के पर्यवेक्षण में 40 पाठ पढाने होगें जिसमें किसी भी प्रकार की छूट नहीं दी जायेगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को प्रयोगात्मक परीक्षा में दो पाठ पढाने होगें जिसका मूल्यांकन बाहय परीक्षको द्वारा विभागाध्यक्ष के संयोजकत्व में होगा। इसके लिए कुल 200 अंक निर्धारित होगें । सत्रीय कार्यों के मूल्यांकन की व्यवस्था विभागाध्यक्ष स्वविवेकानुसार वाहय एवं आंतरिक दोनों रूपों में कर सकते हैं। अधोलिखित सत्रीय कार्य एवं कार्यानुभव विहित हैं जिसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित हैं–

सत्रीय कार्य	**निर्धारित अंक**
1. शिक्षण के प्रत्येक विपय में एक–एक अर्थात कुल दो शिक्षण सामग्री / उपकरण का निर्माण	15
2. अनुभव	
– कार्यानुभव– पुस्तकालय प्रबन्ध, काष्ठकला, चित्रकला आदि	05
– बिद्यालयी अनुभव– विद्यालय के कार्यो का निरीक्षण एवं प्रतिवेदन निर्माण	05
3. सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना एवं अभ्यास(कम से कम पॉच कौशलों पर आधारित)	20
4. मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रशासन	05
5. शिक्षण विषयों से सम्बन्धित आलोचनात्मक पाठ	05
6. स्काउटिंग / गाइडिंग का प्रशिक्षण	15
7. सामुदायिक कार्य जिसमें पर्यावरण–शिक्षा, प्रौढ–शिक्षा एवं सतत्–शिक्षा के कार्यक्रम में भाग लेना भी शामिल हैं	10
8. क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना जिसमें पर्यावरण शिक्षा की योजनाए भी शामिल हैं	10
9. शिक्षण विषय से सम्बन्धित परीक्षा प्रश्नपत्र निर्माण	05
10. व्यक्तित्व विकास / सौन्दर्यबोध कार्यक्रम में सहभागिता	05

सभी विद्यार्थियों के लिए सत्रीय कार्यक्रम पूरा करना अनिवार्य होगा। विभागाध्यक्ष इस सम्बन्ध में सत्रीय कार्य का वितरण स्वविवेकानुसार विभागीय समिति की परामर्श के आधार पर कर सकतें हैं।

नोटः

1. शिक्षण अभ्यास एवं सामुदायिक कार्य के पर्यवेक्षण हेतु शिक्षकों को कुलपति द्वारा स्वीकृत दरों पर आंशिक यात्रा भत्ता एवं विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास एवं प्रयोगात्मक परीक्षा सम्बन्धी समस्त कार्य प्रायोगिक शुल्क से भुगतान किए जायेगें। इसके लिए वित्तअधिकारी, विभागाध्यक्ष को कुलराशि इन कार्यों के प्रारम्भ होने के एक सप्ताह पूर्व अग्रिम राशि के रूप में उपलब्ध करा देगें ।
2. प्रायोगिक परीक्षा लेने के लिए परीक्षकों की एक परिषद होगी जिसमें दो बाह्य सदस्य होगें । शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष इस परिषद के संयोजक का कार्य करेगें।
3. सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन विभागीय समिति द्वारा किया जायेगा जिसके संयोजक विभागाध्यक्ष होगे। सत्रीय कार्यों पर प्रदत्त अंको के परिसीमन का अधिकार विभागाध्यक्ष को होगा।
4. विभागाध्यक्ष सत्रीय कार्यों के मूल्यांकन हेतु स्वविवेकानुसार किसी बाह्य परीक्षक को आमंत्रित करेगें।

बी0 एड0 प्रथम प्रश्नपत्र
शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार

उददेश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थीः

1. भारतीय दर्शन एवं विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा दार्शनिकों की विचारधाराओं को जान सकेगें।
2. शिक्षा एवं शिक्षण के सम्प्रत्ययों को समझ सकेगें।
3. शिक्षा दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों एवं उनकी शिक्षण पद्धतियों के मध्य अन्तर कर सकगें।
4. सामाजिक परिवर्तन और उसके विविध पक्ष, उसको प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों एवं सामाजिक परिवर्तन में विभिन्न अभिकरणों की भूमिका का विश्लेषण कर सकेगें।
5. शैक्षिक नियोजन की आवश्यकता एवं आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका को समझ सकेगें।
6. राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव, मानवीय मूल्यों, मानावाधिकार बोध आदि में शिक्षा की भूमिका की व्याख्या कर सकेगें।

इकाई 1अ. शिक्षा एवं दर्शनः अर्थ, समबन्ध, शिक्षा के विभिन्न स्वरूप, दर्शन की नवीन अवधारणा, दर्शन के उपांगः तत्वमीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा तथा मूल्य मीमांसा, उनके शैक्षिक निहितार्थ ।

ब. भारतीय दर्शन एवं शिक्षाः उपनिषदीय शिक्षा दर्शन स्वरूप एवं महत्व, बौद्ध दर्शन–स्वरूप एवं महत्व, शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई 2अ.शिक्षा दर्शन के कतिपय सम्प्रदाय–विचारवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद एवं प्रयोजनवादः अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति एवं शिक्षक–छात्र सम्बन्ध।

ब. भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा दार्शनिकः शंकराचार्य, महात्मा गांधी, रसेल एवं एनीबेसेन्ट : शिक्षा दर्शन के प्रमुख बिन्दु एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई 3अ. शिक्षा तथा वर्तमान भारतीय समाजः सामाजिक परिवर्तन– अर्थ, विविध पक्ष, भारतीय सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक, सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप के में शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन में विभिन्न अभिकरणों परिवार विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका, सामाजिक व्यवस्था एवं शिक्षा, सामाजिक व्यवस्था से तात्पर्य, प्रकार्यात्मक एवं संरचनात्मक उप प्रणाली, सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा की भूमिका

3ब. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एकता में शिक्षा की भूमिकाः राष्ट्रीय एकता का अर्थ, उद्देश्य, शिक्षा की भूमिका, मानवाधिकार एवं शिक्षा की भूमिकाः मानवाधिकार– अर्थ, उद्देश्य, प्रासंगिकता, प्रजातांत्रिकता का विकास एवं शिक्षा की भूमिका, संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य तथा इसके आत्मसातीकरण में शिक्षा की भूमिका।

इकाई 4अ. शैक्षिक नियोजन एवं आर्थिक विकास, शैक्षिक नियोजन का अर्थ,उद्देश्य, महत्व एवं शैक्षिक नियोजन में शिक्षा की भूमिका, आर्थिक विकास– तात्पर्य, उद्देश्य, आर्थिक

विकास में शिक्षा की भूमिका, मानवीय ूपजी के रूप में शिक्षा की अवधारणा एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई 4ब. संस्कृति एवं शिक्षाः संस्कृति– अर्थ, सभ्यता एवं संस्कृति में अन्तर, संस्कृति के पुर्नस्थापन में शिक्षक की भूमिका, मूल्यः– अर्थ, भारतीय मूल्य एवं इनके सम्बर्द्धन में शिक्षक की भूमि

अध्ययन ग्रन्थ

1. बेकर जॉन. एल.: मार्डन फिलासफीज ऑफ एजुकेशन,, टाटा मैग्राहिल,1980
2. तनेजा,वी. आरः,सोशियों फिलासिफकल एप्रोच टू एजूकेशन, एटलांटिक पब्लि. दिल्ली 1979.
3. इलिच इवानः डी स्कूलिंग सोसायटी, 1973.
4. पाण्डेय के. पी.: प्रासपेक्टिव इन सोशल फाउन्डेशन आफ एजुकेशन, अमिताभ प्रकाशन, दिल्ली, 1983
5. पाण्डेय के. पी0: नवीन शिक्षा दर्शन, अमिताभ प्रकाशन, दिल्ली, 1988.
6. पाण्डेय रामसकलः शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1983.
7. वर्मा रामनाथः महान शिक्षा दार्शनिकः राधा पब्लिकेशन, दिल्ली.
8. ओड एल. के. : शिक्षा के दार्शनिक आधार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.
9. चतुर्वेदी सीतारामः शिक्षा दर्शन,, राज्य हिन्दी संस्थान, लखनउ।
10. ओड एल.के. शिक्षा के नूतन आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

बी0एड0: द्वितीय प्रश्नपत्र
शिक्षा मनोविज्ञान

उद्देश्य: इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ, अध्ययन क्षेत्र एवं उसकी प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
2. विकास की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले बौद्धिक, सामाजिक संावेगिक परिवर्तनों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. अधिगम के विभिन्न सिद्धान्तों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
4. बुद्धि के सम्प्रत्यय, विभिन्न सिद्धान्तों एवं स्मृति को प्रभावित करने वाले कारकों को जान सकेंगे।
5. व्यक्तित्व तथा समंजन की अवधारणाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
6. विशिष्ट बालकों की विभिन्न श्रेणियों एवं उनकी शिक्षा व्यवस्था को समझा सकेंगे।

इकाई 1अ: शिक्षा मनोविज्ञान– अर्थ, अध्ययन क्षेत्र, भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा एवं शैक्षिक दृष्टि से इसकी प्रासंगिकता।

ब. विकासात्मक मनोविज्ञानः विकास–अर्थ, विकास एवं वृद्धि में अन्तर बाल्यावस्था व किशोरावस्था में बौद्धिक, सामाजिक व सांवेगिक विकास सम्बन्धी विलक्षणताएं एवं उसका शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई 2अ. अधिगम का मनोविज्ञानः अधिगम– अर्थ, प्रकार, प्रभावित करने वाले कारक अधिगम और परिपक्वता, अधिगम का स्थानान्तरणः अर्थ, प्रकार एवं शैक्षिक निहितार्थ, अधिगम एवं अभिप्रेरणा– बालक को अभिप्रेरित करने की शिक्षण विधियॉ।

ब.अधिगम के सिद्धान्तः थार्नडाइक, स्किनर, पॉवलाव और गेस्टाल्टवादी सिद्धान्तः प्रमुख बिन्दु एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई 3अ. बुद्धि का मनोविज्ञानः बुद्धिः अर्थ, सम्प्रत्यय, बुद्धि के सिद्धान्तः स्पीयरमैन, थर्स्टन एव गिलफर्ड का सिद्धान्त, बुद्धि परीक्षाओं का प्रयोग एवं सीमाएं, स्मृति एवं विस्मरणः अर्थ एवं शैक्षिक निहितार्थ।

ब. समंजन का मनोविज्ञानः समंजन का अर्थ, प्रकिया, एवं शैक्षिक निहितार्थ, सुसंमजित व्यक्ति की विशेषताऍ।

इकाई 4अ. व्यक्तित्व का मनोविज्ञानः व्यक्तित्व; अर्थ, सम्प्रत्यय, भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा, व्यक्तित्व का विकास, व्यक्तित्व का मापन।

ब. सृजनशीलता– अर्थ, प्रक्रिया, सम्वर्द्धन एवं मापन। विशेष कोटि के बालकः अर्थ प्रतिभाशाली, शैक्षिक रूप से पिछड़े व मंदितमना बालकः विशेषताऍ एवं उनकी शिक्षा व्यवस्था।

प्रायोगिक कार्यः

1. मनोविज्ञान के क्षेत्र में नवीन अनुसंधान से सम्बन्धित दो लेख तैयार करना।

2. कम से कम दो मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग एवं उससे सम्बन्धित प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण।

अध्ययन ग्रन्थः

1. कुन्डु सी.एल.: एजुकेशनल साइकॉलाजी स्टर्लिंग पब्लिशर्स, 1983.

2. गुप्ता एस.पी. एवं गुप्ता अ., उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2004

3. पाण्डेय के0पी0, नवीन शिक्षा मनोविज्ञान विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2007.

4. दत्त एन. के.: द साइकॉलाजीकल फाउन्डेशन्स ऑफ एजुकेशन, दोआबा हाउस दिल्ली 1974.

5 दवे, इन्दु : शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1971.

6. तोमर, लज्जारामः भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान के आधार, विद्याभारती प्रकाशन, संस्कृति भवन, कुरूक्षेत्र।

7. जायसवाल सीतारामः व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

बी0एड0: तृतीय प्रश्नपत्र
शैक्षिक मूल्यांकन एवं क्रियात्मक अनुसंधान

उद्देश्य: इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. शैक्षिक मूल्यांकन और उसके महत्वपूर्ण विन्दुओं– शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम अनुभव और व्यवहार परिवर्तन का अर्थ समझ सकेगें।
2. पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त को जान सकेगें।
3. एक अच्छे परीक्षण की विशेषताओं तथा निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के गुण दोषों से अवगत हो सकेगें।
4. वस्तुनिष्ठ परीक्षण निर्माण विधि प्रक्रिया को जान सकेगें।
5. भारतीय विद्यालयों के संदर्भ में क्रियात्मक अनुसंधान के अर्थ एवं महत्व को समझ सकेगें।
6. क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली जान सकेंगे।
7. विद्यालयी परिस्थितियों के संदर्भ में क्रियात्मक अनुसंधान की योजना बना सकेंगे।
8. ऑकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या के लिये सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर सकेगें।

इकाई 1अ. मापन तथा मूल्यांकन की अवधारणा, मूल्यांकन के महत्वपूर्ण विन्दु, शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम अनुभव एवं व्यवहार परिवर्तन, मूल्यांकन तथा मापन में भेद,मापन के स्तर, संरचनात्मक एवं प्रयोगात्मक मूल्यांकन, मानक संदर्भित एवं निकष संदर्भित परीक्षण, अभिप्राय तथा विशेषताएं।

ब. अधिगम अनुभव जनित करने हेतु पाठ्यक्रम निर्माण: पाठ्क्रम से तात्पर्य एवं निर्माण सिद्धान्त, विषय केन्द्रित तथा अनुभव केन्द्रित समन्वित पाठ्यक्रम: विशेषताएं व सीमायें।

इकाई 2अ. एक अच्छे परीक्षण की विशेषताएं, निबन्धात्मक, वस्तुनिष्ठ एवं लघुउत्तरीय परीक्षण– विशेषताएं एवं सीमायें।

ब. वस्तुनिष्ठ परीक्षण निर्माण विधि एवं प्रमाणीकरण: शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारण, पद (प्रश्न) लेखन, पद विश्लेषण: विभेदीकरणमान एवं काठिन्य स्तर निर्धारण, विश्वसनीयता एवं वैधता निरूपण, मानक निर्धारण।

इकाई 3अ. क्रियात्मक अनुसंधान से तात्पर्य, शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान तथा परम्परागत (मौलिक एवं व्यवहृत) अनुसंधान में अन्तर, भारतीय विद्यालयों में क्रियात्मक अनुसंधान का महत्व, कतिपय शोध मुद्दे ।

ब. क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणालीः समस्याओं का चयन, क्रियात्मक परिकल्पनाएॅं, (उपकल्पनाएं) तथा उनका निर्माण, क्रियात्मक परिकल्पना की परीक्षा हेतु आवश्यक अभिकल्प निर्मित करना, क्रियात्मक अनुसंधान के परिणामों का मूल्यांकन।

इकाई 4अ. विद्यालयी परिस्थिति के सन्दर्भ में क्रियात्मक अनुसंधान की योजनाएॅं, योजना का प्रारूप तथा उनका कार्यान्यवन।

ब. सांख्यिकीय विधियॉं— केन्द्रवर्तीमान, विचलनमान, सहसम्बन्धमान, प्रदत्तों का बिन्दुरेखीय प्रदर्शन ।

प्रयोगात्मक कार्यः

1. प्रश्नपत्र निर्माण— कठिनाई स्तर एवं विभेदन क्षमता का निर्धारण।
2. क्रियात्मक परियोजना बनाना तथा उसका कार्यान्यवन।

अध्ययन ग्रन्थः

1. शर्मा, आर. ए., मापन एवं मूल्यांकन, लायल बुक डिपो, मेरठ।
2. भार्गव, महेश मनोवैज्ञानिक परीक्षण, आगरा।
3. गुप्ता, एस. पीः आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, 11, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
4. आस्थाना, विपिनः मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. पाण्डेय,के.पी., शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, अमिताभ प्रकाशन, मेरठ।
6. सिंह, लाल साहब, मापन, मूल्यांकन तथा सांख्यिकी, साहित्य प्रकाशन, हास्पीटल रोड, आगरा।
7. कोरी.स्टीफेन एम., एक्शन रिसर्च टू द इम्प्रूव स्कूल प्रेक्टीस ब्यूरो आफ पब्लिकेशन्स, टीचर्स कालेज कोलम्बिया, न्यूयार्क 1993.
8. एनस्टासी ए. साइक्लाजिकल टेस्टींग, न्यूयार्क, द मैकमिलन कं0
9. ग्रीनलैण्ड, एन.इ., मीजरमेंट एण्ड इवेलुएशन इन टीचिंग, न्यूयार्कः द मैकमिलन कं0
10. गिलफोर्ड जे0पी0 साइकोमेट्रिक मेथड्स, न्यूयार्क, मेग्रो हिल बुक कं0
11. फ्रीमैन, एफ. एस., थ्यूरी एण्ड प्रैक्टिस आफ साइक्लाजिकल टेस्टिंग, न्यूयार्क आक्सफोर्ड एण्ड एफ बी एच. पब्लिशिग कं0
12. फरगुसन, एल डबलू, पर्सनालिटी मिजरमेंट, न्यूयार्कः मेग्रो हिल बुक कं0
13. गेरेट एच. इ., स्टेटिस्टिक इन साइक्लाजी एण्ड एजुकेशन, बाम्बे बकिल्स, पंलर एण्ड साइमन्स प्रा. लि.।
14. इबल आर. एल., मीजरिंग एजुकेशनल एक्विमन्ट इन्डिविजुवल क्लीफूस, एन. जें. प्रैक्टिस हाल इन्फ.
15. ब्लूम बी एस, मीजरिंग एजुकेशनल आब्जेक्टिव हैण्डबुक—1ः कागनेटिव डोमेन्स, न्यूयार्कः डेविड मे के कं0

बी0एड0: चतुर्थ प्रश्नपत्र
शैक्षिक तकनालॉजी एवं कम्प्यूटर सहअनुदेशन

उद्देश्य: इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. शिक्षण के अर्थ,शिक्षण अधिगम–सम्बन्ध एवं शिक्षण के विभीन्न सूत्रों का जान सकेंगे
2. शिक्षण के विभिन्न प्रतिमानों के मध्य अन्तर कर सकेगें।
3. अभिक्रमित अधिगम की तकनालॉजी का प्रयोग करके अभिक्रम निर्माण कर सकेगें।
4. शैक्षिक तकनालॉजी के विभिन्न प्रकारों को जान सकेगें।
5. सूक्ष्म शिक्षण के प्रयोग द्वारा शिक्षण कौशलों को सीख सकेगें।
6. सम्प्रेषण की तकनीकी और उससे सम्बन्धित नवीन धारणाओं से परिचित हो सकेगें।

इकाई 1अ. शिक्षण की धारणा, शिक्षण अधिगम सम्बन्ध, शिक्षण के सूत्र, शिक्षण के चरण और इनमें निहित संक्रियाऍ, शिक्षण के स्तर, स्वरूप एवं विशेषताऍ।

ब. शिक्षण के प्रतिमान– प्रतिमान से तात्पर्य, शिक्षण प्रतिमान की आवश्यकता एवं आवश्यक तत्व, शिक्षण प्रतिमानों का वर्गीकरण– आधारभूत शिक्षण प्रतिमान एवं पृच्छा प्रशिक्षण प्रतिमान एवं इसकी प्रासंगिकता।

इकाई 2अ. अभिक्रमित अधिगम की तकनालॉजी– अभिक्रमित अधिगम से तात्पर्य एवं विशेषता, अभिक्रमित अधिगम के बारे में भ्रान्तियां, अभिक्रमित अधिगम के विभिन्न प्रकार– रेखीय, शाखीय, श्रृंखलित एवं उनकी प्रासंगिकता।

ब. कम्प्यूटर सहअनुदेशन–तात्पर्य एवं विलक्षणताऍ, कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर ,स्वरूप, विशेषताएं एवं अनुप्रयोग, कम्प्यूटर अनुप्रयोग के अपेक्षित सावधनियॉ, कम्प्यूटर अनुप्रयोग एवं नवीन प्रवृत्तियॉ– इमेल, इन्टरनेट एव इन्ट्रानेट, इलर्निंग।, आभासी कक्षा।

इकाई 3अ. शैक्षिक तकनालॉजी– धारणा एवं प्रकारता– अनुदेशन तकनालॉजी, अनुदेशनात्मक रूपरेखा, शिक्षण तकनालॉजी– स्वरूप एवं विशेषता।

ब. सूक्ष्म एवं अनुरूपित शिक्षण– धारणा, आवश्यकता, प्रक्रिया, सूक्ष्म शिक्षण का भारतीय प्रतिमान, शिक्षण कौशल।

इकाई 4अ. शिक्षण अधिगम की व्यवस्था– अवधारणा एवं सोपान, नियोजन, आयोजन, अग्रसारण एवं नियंत्रण के सन्दर्भ में आवश्यक कियाऍ, शैक्षिक निहितार्थ।

ब. सम्प्रेषण तकनीकी एवं शिक्षण–सम्प्रेषण सम्प्रत्यय, आवश्यकता एवं प्रक्रिया, शिक्षण सहायक सामग्री, वर्गीकरण, प्रभावी शिक्षण में इनकी भूमिका।

प्रयोगात्मक कार्य:

1. कम्प्यूटर के अनुप्रयोग द्वारा एक एक अभिक्रम का निर्माण।
2. सूक्ष्म शिक्षण का प्रयोग करके कौशलों की पाठ योजना निर्माण।

अध्ययन ग्रन्थः

1. पासी बी. के., विकर्मिंग बेटर टीचर, ए माइक्रो टीचिंग एप्रोच, साहित्य मुद्राणालय, अहमदाबाद, 1975.
2. सिंह त्रिभुवन एवं सिंह प्रभाकर, शिक्षण अभ्यास के सोपान, भारत भारती प्रकाशन, जौनपुर 1984.
3. सिंह एल. सी. एवं शर्मा आर. डी., माइक्रोटीचिंग, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, नेशनल साइकोलाजिकल कारपोरेशन, आगरा, 1991.
4. ब्राउडी एलः मॉडल आफ टीचिंग, प्रेन्टिस हॉल ऑफ आस्ट्रेलिया, आस्ट्रेलिया 1985.
5. जायॅस ब्रूस एवं वील मार्शाः माडल आफ टीचिंग, प्रेक्टिस हाल इंक, न्यूजर्सी 1972.
6. सनसनवाल डी. एन. एवं सिंह प्रभाकरः माडल आफ टीचिंग, सोसाइटी फार एजुकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेण्ट, बरौदा 1991.
7. डिसिको जान पी.: एजुकेशनल तकनालॉजीः रीडिंग इन प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्शन, लन्दन, हाल्ट रिनेहार्टएण्ड बिन्स्टोन, 1964
8. सम्पत के. तथा अन्य, इन्स्ट्रक्शन टू एजुकेशनल तकनालाजी, नयी दिल्ली स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड 1988.
9.शर्मा आर. ए. शैक्षिक तकनीकी, लायल बुक डिपो, मेरठ 1990
10.मित्तल सन्तोप, शैक्षिक तकनीकी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1995.
11. अग्रवाल जे. सी., एसेन्शियल आफ एजुकेशनल टेक्नालाजीः टीचिंग लर्निंग एनोवेशन इन एजुकेशन, विकास पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
12. दास आर. सी.: एजुकेशनल तकनालाजी, ए बेसिक टेक्स्ट
13. पाण्डेय के. पी.: मार्डन कान्सेप्ट फार टीचिंग विहेवियर, अनामिका पब्लिशर प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1997.
14. पाण्डेय सरला एवं उपाध्याय आर., शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001.
15. पाण्डेय के. पी. शिक्षण अधिगम की तकनालाजी, अमिताभ प्रकाशन, मेरठ, 1988.
16. स्किनर बी.एफ. दी तकनालॉजी आफ टीचिंग, मेरेडियम कारपोरेशन, न्यूयार्क, 1968.

पंचम प्रश्नपत्र
पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य

उद्देश्य: इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थीः

1. पर्यावरण के अर्थ, विविध आयाम, प्रदूषण एवं इसकी रोकथाम में अध्यापक की महती भूमिका से अवगत हो सकेगें।
2. परम्परागत भारतीय समाज में पर्यावरण के महत्व को समझ सकेगें।
3. पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य, महत्व, प्रभावित करने वाले कारकों एवं इस सम्बन्ध में शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों से की जाने वाली अपेक्षाओं को समझ सकेगें।
4. पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न आब्यूह रचनाओं का प्रयोग कर सकेगें।
5. पर्यावरण शिक्षा से जुड़ी हुई समस्याओं तथा उसके समाधान में शिक्षक की भूमिका को चिन्हित कर सकेगें।
6. पर्यावरण प्रबन्धन एवं पर्यावरण शिक्षा में भारतीय मूल्यों की भूमिका का आकलन कर सकेगें।

इकाई 1अ. पर्यावरण– तात्पर्य, विविध आयाम, घटक, पर्यावरण प्रद्रूषणः तात्पर्य, प्रकार, पर्यावरण अवनयन, पर्यावरण प्रदूषण के रोकथाम में शिक्षक की भूमिका, परम्परागत भरतीय समाज में पर्यावरण का महत्व।

ब. पर्यावरण संरक्षण के सम्बन्ध में गांधी, टैगोर, कृष्णमूर्ति के विचार।

इकाई 2अ. पर्यावरण शिक्षाः तात्पर्य, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व, पर्यावरण शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक, पर्यावरण शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं से अपेक्षाएँ।

ब. पर्यावरण शिक्षा के विविध संसाधन एवं उनके उपयोग की विधियाँ, पर्यावरण शिक्षा के प्रचार–प्रसार में जन संचार माध्यमों की भूमिका।

इकाई 3अ. पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु आब्यूह रचना– ब्याख्यान, परिचर्चा, परियोजना, अनुरूपण एवं अनुरूपित खेल– समस्या समाधान, पृच्छा तथा क्षेत्रीय कार्य, उपयोग एवं सीमायें।

ब. पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन एवं मूल्यांकन एवं उनके प्रयोग में कठिनाइयां, पर्यावरण जनित समस्याओं के समाधान में क्रियात्मक अनुसंधान की भूमिका।

इकाई 4अ. पर्यावरण शिक्षा में भारतीय मूल्यों की भूमिका, पर्यावरण चेतना के विकास में अध्यापकों का दायित्व।

ब. पर्यावरण प्रबन्ध एवं समुदाय पर आधारित पर्यावरण शिक्षा– पर्यावरण प्रबन्ध का अर्थ, प्रभाव एवं मूल्यांकन।

स. पर्यावरण शिक्षा के सन्दर्भ में जनसंख्या शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा का महत्व।

प्रयोगिक कार्य:

1. पर्यावरण और उसके संरक्षण से सम्बन्धित उक्तियों एवं विचारों का भारतीय ग्रन्थों से संकलन।
2. पर्यावरण शिक्षा/प्रदूषण नियंत्रण पर एक परियोजना का निर्माण।

अध्ययन ग्रन्थः

1. गुप्ता बृजमोहनः जनसंचार के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 1992.
2. गोयल, एम.के.: अपना पर्यावरण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1995.
3. गुप्ता, बी.एल.: इनवायरमेन्टल अवेयरनेस एण्ड मास मिडिया, बिन्दुरा.
4. खुशु, टी.एन.: इनवायरमेण्टल कन्सर्न एण्ड स्टेटजीज, समरी आफ थीम बेबर, प्रजेन्टेड बिफोर आई.एन.एस.ए.सी.ओ.एस.टी.ई.डी. वर्कशाप आन रोल आफ साइंस्टिफिक सोसायटीज एण्ड एकेडमिक्स इन नेशनल डेवलपमेण्ट नबम्बर 15. नई दिल्ली. 1983.
5. प्रसाद, गूरू सम्पादकः मानव पर्यावरण की सामाजिक समस्यायें, नई दिल्ली, 1985.
6. राजपूत जे.एल. तथा अन्यः रिपोर्ट आफ प्रोजेक्ट इनवायरमेण्ट, 1980.
7. सक्सेना ए.बी.: इनवायरमेण्टल एजुकेशनल नेशनल साइकोलाजिकल कारपोरेशन, आगरा, 1986.
8. सक्सेना ए.वी.:एजूकेशन फार दी इनवायरमेण्टल कन्सर्न्स, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1996.
9. नागर चौधरी बी.डी. एण्ड भट्ट एस.: दी ग्लोबल इनवायरमेण्टल मूवमेन्ट न्यू होप फार मैककाइन्ड, इस्टर्नली पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1987.
10. प्रो. पाण्डेय के.पी. एण्ड पाण्डेय सरलाः पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ. एस. एस. 1996.
11. सेंगर एस.एस. 1996 पर्यावरण शिक्षा, साहित्य प्रकाशन, आगरा
12. अग्रवाल एस.के.: पापुलेशन एण्ड इनवायरमेन्ट इन रूइंग– दी क्राइसेस आफ सर्वाइवल, लोढ़ा आर एस. इडिटेड–इन्टस पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
13. यूनेस्कोः इनवायरमेन्टल एजुकेशन इन एशिया एण्ड पैसिफिक रिर्पोट आफ ए रिजनल वर्कशाप बैंकाक, यूनेस्को रिजनल आफिस फार एजुकेशन इन एशिया एण्ड पैसिफिक 1980.
14. एन.सी.ई.आर.टी.: आल इण्डिया इनवायरमेन्टल स्टडी प्रोजेक्ट फार ट्रेनिंग आफ इनसर्विस टीचर एजुकेटर्स, 8 नई दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी.,1979.
15. दी वर्ल्ड इनवायरमेन्ट, ए रिर्पोट बाई यूनाइटेड नेशनल इनवायरमेन्ट प्रोग्राम एड. हालगेट क्लास एण्ड गिलबर्ट ह्वाइट।
16. रिर्पोट आफ यूनाइटेड नेशन कान्फ्रेन्स आफ ह्यूमेन इन्वायरमेन्ट स्टाफ होम, 1972.
17. रिपोर्ट ऑफ इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स आन इनवायरमेन्टल एजुकेशन, ग्लोबल पर्सपेक्टिव, 1981.

बी. एड. पंचम प्रश्नपत्र
शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थीः

1. निर्देशन की प्रकृति, विषय क्षेत्र, प्रासंगिकता एवं उसके विभिन्न प्रकारों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
2. निर्देशन के कतिपय सिद्धान्तों एवं इस क्षेत्र में प्रचलित आधुनिक प्रवृत्तियों एवं विचारधाराओं को समझा सकेगें।
3. निर्देशन के विभिन्न प्रकारों के मध्य अन्तर कर सकेगें।
4. परामर्श के सम्प्रत्यय एवं उसके विभिन्न प्रकारों का विश्लेषण कर सकेगें।
5. शिक्षक के लिये निर्देशन एवं परामर्श के महत्व की व्याख्या कर सकेगें।
6. निर्देशन एवं परामर्श हेतु विभिन्न विधियों एवं युक्तियों का प्रयोग कर सकेगें।

इकाई 1अ. निर्देशन– अर्थ, संकल्पना, आवश्यकता, उद्देश्य, विषय क्षेत्र एवं भारतीय सन्दर्भ में निर्देशन की स्थिति।

ब. निर्देशन की आधारभूत अर्न्तनिहित मान्यताऍ एवं सिद्धान्त, आधुनिक प्रवृत्तियॉ एवं भारतीय सन्दर्भ में निर्देशन की समस्याऍ।

इकाई 2अ. निर्देशन के प्रकार–शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत निर्देशन– उद्देश्य आवश्यकता, प्रक्रिया एवं कार्यतन्त्र।

ब.विशेषकोटि के बालको की निर्देशन आवश्यकताऍ एवं इस दिशा में किये जा रहे प्रयास।

इकाई 3अ. परामर्श– अर्थ, निर्देशन तथा परामर्श में सम्प्रत्यात्मक समानता एवं अन्तर, परामर्श की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता, विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं का संगठन।

ब. परामर्श की प्रविधिः निदेशात्मक, अनिदेशात्मक, संकलनात्मक– सोपान, अन्तर एवं विशेषतायें एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई 4अ. निर्देशन एवं छात्र मूल्यांकन– निर्देंशन तथ मूल्यांकन में अपेक्षित मूल्यांकन हेतु प्रयुक्त प्रमापी एवं अप्रमापी विधियॉ– साक्षात्कार, प्रेक्षण, व्यष्टि अध्ययन, आत्मकथात्मक विवरण, मूल्यांकन हेतु प्रयुक्त परीक्षणों में प्रारूप एवं उपयोग की विधि।

ब. अभिलेख– अर्थ, प्रकार, संचयी अभिलेख का निर्माण, सोपान तथा उपयोगिता।

प्रायोगिक कार्यः

1. व्यष्टि अध्ययन विधि द्वारा ऑकड़े एकत्र कर किन्ही दो विद्यार्थियों का संचयी अभिलेख तैयार करना।
2. अनिदेशात्मक परामर्श के द्वारा समस्या समाधान एवं प्रतिवेदन निर्माण।

<u>अध्ययन ग्रन्थ</u>

1. जॉन्स ए.ज., प्रिन्सिपुल्स ऑफ गाइडेन्स, न्यूयार्क, मैग्राहिल बुक कं. लेट इडि0.

2. दवे–1, बेसिक एसेन्सियल आफ काउन्सेलिंग कटर्लिग पब्लिशर्स गंगाराम एण्ड ग्रन्ड सन्स, रथयात्रा, वाराणसी

3. अग्रवाल जें.सी. एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेन्स एण्ड काउन्सेलिंग,दोआबा पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।

4. मिलर करोल एल., फाउन्डेशन आफ गाइडेन्स, हारपर एण्ड ब्रदर्स

5. मणि मेयर जी. इ., प्रिन्सिपुल टेक्निक्स आफ वोकेशनल गाइडेन्स एम. क्रेउ हिल!

6. पाण्डेय के.पी., एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेन्स, अमिताभ प्रकाशन हिन्दी एण्ड इग्लिश

7.दवे इन्दु, परामर्श के मूल तत्व, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी तिलकनगर, जयपुर।

8. पाण्डेय के.पी., शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, अमिताभ प्रकाशन, गाजियाबाद

9. जायसवाल सीतारामः, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श

10. सिंह रामपाल एवं उपाध्याय वल्लभ, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

11. ओबेराय एस0 सी0: शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श

बी.एडः पंचम प्रश्नपत्र

भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं वर्तमान समस्याएँ

इकाई 1अ. प्राचीन भारतीय शिक्षा का स्वरूप– वैदिक कालीन शिक्षा, बौद्ध कालीन शिक्षा, शिक्षण विधि, विशेषताएँ शिक्षण एवं शिक्षण केन्द्र।

ब. मध्यकालीन शिक्षा का विकास, विशेषताएँ शिक्षण विधि एवं शिक्षण केन्द्र।

स. औपनिवेशिक शिक्षा– मैकाले शिक्षा योजना, वुड शिक्षा योजना के आधार पर शिक्षा का स्वरूप।

इकाई 2अ. शिक्षा के विकास में विभिन्न आयोगों की संस्तुतियाँ– विश्वविद्यालय आयोग, मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग

ब. नई शिक्षा निति 1986 एवं अद्यतन शैक्षिक नीतियों की संस्तुतियां, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की संस्तुतियाँ।

इकाई 3अ. प्राथमिक शिक्षा– ऐतिहासिक परिदृश्य, अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या, प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए किये गये प्रयास।

ब. अनौपचारिक एवं खुले विद्यालय के रूप में चलाये जाने वाल`कार्यक्रमों की प्रभाविकता, अधिगम बोझ, न्यूनतम् अधिगम स्तर, परीक्षा सुधार।

इकाई 4अ. माध्यमिक शिक्षा ऐतिहासिक परिदृश्य संरचना, संगठन, सामान्य समस्याएं, शिक्षा का उद्यमीकरण, अर्थ समस्याएं, माध्यमिक स्तर पर परीक्षा सुधार।

ब. निम्न से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन– शैक्षिक अवसरों की समानता, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा, नारी शिक्षा प्रौढ शिक्षा।

प्रायोगिक कार्यः

1. वैदिक साहित्य और बौद्ध साहित्य से शिक्षाप्रद सुक्तियों का संकलन।
2. वैदिक काल की प्रमुख विदुषी महिलाओं के सन्दर्भ में जानकारी एकत्र कर उन्हें लिपिबद्ध करना।
3. राष्ट्रीय ज्ञान आयोग से सम्बन्धित समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों का क्रमबद्ध संकलन करना।

अध्ययन ग्रन्थः

1. कपूर उर्मिलाः, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ
2. श्रीवास्तव जे.पी. एवं ओबराय, आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
3. चौबे प्रसाद सरयूः, भारतीय शिक्षा समस्याएँ, प्रवृत्तियां और नवाचार।
4. पाण्डेय के.पी., भारतीय शिक्षा की समस्याएं वर्तमान सन्दर्भ।
5. वर्गीय, शंकर विजय भारतीय शिक्षा का इतिहास. विशेषता।
6. पाठक पी.डी. एवं त्यागी, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ।
7. शर्मा रामनाथः प्राब्लम्स आफ एजुकेशन इन इण्डिया।
8. जौहरी वी.पी. एवं पाठक पी. डी., भारतीय शिक्षा का इतिहास।
9. पाण्डेय रामशकल, भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ।
10. त्यागी गुरूसरनदास एवं तिवारी रमा, भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं।

11 भटनागर सुरेश, आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ।

संस्कृत शिक्षण

इकाई 1अ. संस्कृत भाषाः प्रकृति, उद्देश्य एवं संस्कृत शिक्षण के लिये निहितार्थ, संस्कृत शिक्षण और भाषा विज्ञान।

ब. संस्कृत भाषा का अन्य भारतीय भाषाओं पर प्रभाव, संस्कृत शिक्षा आयोग की मुख्य संस्तुतियां एवं वर्तमान स्थिति।

इकाई 2. संस्कृत भाषा के उच्चारण सम्बन्धी छात्रों की कठिनाइयॉ, ध्वनि विज्ञान, उच्चारण–दोष, कारण एवं निवारण।

इकाई 3. संस्कृत शिक्षण में शैक्षणिक उपकरण एवं सहायक सामग्री– भाषा प्रयोगशाला, दृश्य सामग्री, दृश्य एवं श्रव्य सामग्री, कम्प्यूटर समर्थित अनुदेशन।

इकाई 4अ. संस्कृत शिक्षा की विधियॉ– गद्य के सन्दर्भ में, पद्य के सन्दर्भ में, व्याकरण के सन्दर्भ में, संस्कृत शिक्षण हेतु पाठयोजना निर्माण।

ब. संस्कृत में मूल्यांकन की नवीन प्रविधियॉ।

प्रायोगिक कार्यः

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों हेतु वस्तुनिष्ठ परीक्षण का निर्माण।
2. शैक्षिक एवं मूल्यपरक संस्कृत सूक्तियों का कम से कम 50 का संकलन

अध्ययन ग्रन्थः

1. गुप्त, मनोरमा–भाषा शिक्षण, सिद्धान्त और प्रविधि, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
2. चौबे, विजयनारायण– संस्कृत शिक्षण विधि, हिन्दी संस्थान, लखनउ।
3. पाण्डेय, रामशकल– संस्कृत शिक्षण
4. द्विवेदी वाचस्पति, संस्कृत शिक्षण विधि, सुशील प्रकाशन, चौक पटना।
5. चान्फे, बी0 एन0– संस्कृत शिक्षण विधि।
6. तिवारी, भोलानाथ– भाषा विज्ञान।
7. तिवारी. उदयनारायण– भाषा विज्ञान

हिन्दी शिक्षण

इकाई 1अ. मातृभाषा शिक्षण एवं उसका महत्व, राष्ट्रीय एकता के विकास में हिन्दी की भूमिका।

ब. हिन्दी शिक्षण के उद्‌देश्यः ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, रसात्मक एवं सर्जनात्मक।

इकाई 2अ. भाषा शिक्षण एवं भाषा विज्ञानः ध्वनि विज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान एवं अर्थ विज्ञान।

ब. भाषा शिक्षण एवं उच्चारणः शुद्ध उच्चारण का महत्व, उच्चारण में दोष, कारण एवं निदान।

इकाई 3अ. हिन्दी शिक्षण के सन्दर्भ मेंः गद्य शिक्षण, पद्य शिक्षण, व्याकरण शिक्षण।

ब. भाषा शिक्षण में पाठ्य पुस्तकों का महत्व, उनके प्रकार, गुण निर्माण एवं उनका मूल्यांकन

इकाई 4अ. भाषा शिक्षण में दृश्य–श्रव्य साधनों की भूमिकाः दृश्य उपकरण, श्रव्य उपकरण, दृश्य–श्रव्य उपकरण एवं कम्प्यूटर।

ब. हिन्दी शिक्षण एवं मूल्यंकान की नवीन प्रविधियॉ ।

प्रायोगिक कार्यः

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों हेतु वस्तुनिष्ठ परीक्षण का निर्माण।
2. शैक्षिक एवं मूल्यपरक संस्कृत सूक्तियों का कम से कम 50 का संकलन

अध्ययन ग्रन्थः

1. गुप्त, मनोरमा– भाषा शिक्षण सिद्धान्त और प्रविधि, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा।
2. वर्मा, रामचन्द्र– हिन्दी प्रयोग।
3. चतुर्वेदी, सीताराम– भाषा की शिक्षा।
4. पाण्डेय, रामशकल– हिन्दी शिक्षण
5. दूबे, मीरा– हिन्दी शिक्षण
6. तिवारी, उदयनारायण– भाषा विज्ञान
7. तिवारी, भोलानाथ– भाषा विज्ञान

English Teaching

Objective: After Studying this paper student will be able to-

1. Know about the nature of foreign language.
2. Know about the principles of language teaching.
3. Set the objectives of English teaching at different level.
4. Use the Proper method of teaching prose, poetry and grammar.
5. Use Proper material aids while teaching.
6. Prepare the lesson plan for teaching at different stages.

Unit 1. Place of English in School curriculum, Nature of language and language learning, general view of language, its nature and implication for language teacher, principles of language teaching.

Unit 2. Objective of teaching English at Junior and Senior level, Taxonomy of educational objectives to English teaching, characteristics of good objective.
(b) Technological aids in teaching English language laboratory, visual aids, Audio-visual aids.

Unit 3. (a) Methods of teaching English: Translation-cum Grammar method, Direct method, Dr. West's new method, Substitution method, Bilingual method
(b) Lesson plans- Meaning and preparation of lesson plan of Prose, Poetry, Grammar, Composition.

Unit 4 (a) Language Teaching: Teaching of Reading,Writing,pronunciations, vocabulary and Spelling
(b) Evaluation in English Teaching- New techniques

Books:

1. Pandey K.P.and Amita - Teaching English in India.
2. Bisht, Abha Rani- Teaching English in India.
3. Gurrey,p.- Teaching of English as a foreign language.
4. West, M.- Learning to need a foreign language.
5. Dr. Jain- Fundamental of English Teaching.
6. Sharma, T.C.- Modern methods of teaching English.
7. Frisby, A.C.- Teaching English.
8. Chaudhary, N.R.- Teaching English in Indian School.
9. Vargees, B.V.- Modern methods of teaching.
10. Sachdeva, M.S.- Teaching of English.

<u>इतिहास शिक्षण</u>

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. शिक्षा में इतिहास शिक्षण का स्थान, विषय क्षेत्र, आवश्यकता एवं उपयोगिता को समझ सकेगें।
2. इतिहास का अन्य विषयों से सम्बन्ध तथा इतिहास शिक्षण का उद्देश्य विभिन्न समय के अनुसार समझ सकेगें।
3. इतिहास का पाठ्यक्रम प्रत्यय, निर्माण तथा विभिन्न स्तरों पर वर्तमान पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेगें।
4. इतिहास शिक्षण की विभिन्न विधियों का प्रयोग करके उसमें विशेष प्रविधियों का प्रयोग करना सीखेंगे।
5. इतिहास शिक्षण में पाठ्य सामग्रियों की उपयोगिता एवं इतिहास शिक्षण में पाठ योजना बनाना सीख सकेगें।
6. इतिहास शिक्षण में मूल्यांकन के आधार पर परीक्षण निर्माण करना सीख सकेगें।

इकाई 1अ. इतिहास शिक्षण का स्थान, विषय क्षेत्र, आवश्यकता एवं इतिहास शिक्षण का विद्यालयी पाठ्यक्रम में स्थान।

ब. इतिहास शिक्षण का उद्देश्य एवं महत्व तथा विभिन्न स्तरों पर इतिहास शिक्षण के उद्देश्य।

इकाई 2अ. इतिहास का पाठ्यक्रमः प्रत्यय, निर्माण के सिद्धान्त एवं इतिहास विषय का अन्य विषयों से सम्बन्ध ।

ब. इतिहास शिक्षण की विभिन्न विधियॉं– कहानी, व्याख्यान, प्रोजेक्ट विधि, कथानक विधि एवं वार्तालाप विधि।

इकाई 3अ. इतिहास शिक्षण में पाठ्य सहायक सामग्रियॉं एवं उनकी उपयोगिता।

ब. इतिहास शिक्षण में पाठयोजना।

इकाई 4.अ. इतिहास शिक्षण का मूल्यांकन, वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के आधार पर परीक्षण निर्माण एवं वैधता परीक्षण।

ब. इतिहास शिक्षण में इतिहास कक्ष एवं शिक्षक।

प्रायोगिक कार्य

1. किसी विषयवस्तु पर एक इकाई परीक्षण का निर्माण।
2. इतिहास सम्बन्धित किसी नवीन खोज पर एक निबन्ध लेखन।

अध्ययन ग्रन्थः

1. बील्स ए. एच.— ए गाइड टू द टीचींग ऑफ हिस्ट्री इन स्कूल, यूनिवर्सिटी ऑफ लन्दन प्रेस, 1837.
2. छोट एम.डी.— द टीचिंग ऑफ हिस्ट्री— ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1949
3. घोष के. टी.— क्रिएटिव टिचिंग ऑफ हिस्ट्री
4. हिल सी. पी. — सजेसन्स आफ द टीचिंग ऑफ हिस्ट्री— यूनेस्कों ट्रेण्ड इन फ्रान्स।
5. जान्सन एच.— टीचिंग आफ हिस्ट्री— मैक मिलन कं0, न्यूयार्क, 1950.
6. एन.सी.ई.आर.टी.— टीचिंग हिस्ट्री इन सेकेण्डरी स्कूल— एन.सी.आर.टी दिल्ली।
7. वेस्बे इ—बी.— टीचिंग सोशल स्टडी— डी सी हेल्थ इन होघी स्कूल, टाम्ब, 1952
8. वी.डी. घाटे— इतिहास शिक्षण, हरियाण साहित्य अकादमी, चण्डीगढ।
9. साहब सिंह सैदा— इतिहास शिक्षण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10. आर. ए. शर्मा— इतिहास शिक्षण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
11. बीडी. सैदा एण्ड साहब सिंह— धनपंत राव पब्लिशिंग कं0 प्रा. लि., नई दिल्ली

भूगोल शिक्षण

उद्‌देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. विद्यालयी पाठ्‌यक्रम में भूगोल शिक्षण का स्थान एवं भूगोल शिक्षण के उद्‌देश्यों को जान सकेगें।
2. भूगोल शिक्षण में शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकेगें।
3. भूगोल शिक्षण की पाठयोजना बना सकेगें।
4. भूगोल शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग कर सकेगें।
5. भूगोल शिक्षण में मूल्यांकन के आधार पर परीक्षण निर्माण कर सकेगें।

इकाई 1अ. भूगोल–तात्पर्य, विषय क्षेत्र, भूगोल शिक्षण का उद्‌देश्य।

ब. भूगोल शिक्षण का महत्व एवं पाठ्‌ग्रक्रम में भूगोल का स्थान।

इकाई 2अ. भूगोल का पाठ्‌यक्रम, निर्माण तथा सिद्धान्त।

ब. माध्यमिक स्तर पर लागू वर्तमान पाठ्‌यक्रम का आलोचनात्मक विश्लेषण.

इकाई 3अ. भूगोल शिक्षण की विधियॉ– निरीक्षणात्मक विधि, आगमन–निगमन विधि, व्याख्यान विधि, भ्रमण विधि, प्रदर्शन विधि, प्रादेशिक विधि, तुलनात्मक विधि, डाल्टन विधि, प्रोजेक्ट विधि।

ब. भूगोल शिक्षण के लिए पाठ योजना, युक्तियॉ एवं सहायक सामग्री एवं उपयोगिता।

इकाई 4अ. भूगोल में मूल्यांकन विधियॉ, वस्तुनिष्ठ विधि पर आधारित मूल्यांकन के लिए परीक्षणों का निर्माण एवं विश्वसनीयता तथा वैधता का निर्धारण।

ब. भूगोल प्रयोगशाला, पुस्तकालय एवं क्लब.

प्रायोगिक कार्य :

1. विषय से सम्बन्धित एक मानचित्र एवं एक माडल का निर्माण।
2. वाराणसी के किन्ही दो विद्यालयों में भूगोल शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण विधियों का आलोचनात्मक विश्लेषण ।
3. भूगोल से सम्बन्धित नवीन अन्वेषणों एवं घटनाओं पर आधारित एक निबंध।

अध्ययन ग्रन्थः

1. सिंह हरनारायण, भूगोल शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1985.
2. वर्मा, ओ.वी., भूगोल शिक्षण, स्टर्लिंग पब्लिशर्स, 1991.
3. हाल डेविड, ज्योग्राफी एण्ड दी ज्योग्राफी टीचर, लन्दन, ज्योग्राफी हाल, 1976.
4. राव एम. एस., टीचिग आफ ज्योग्राफी, अनमोल पब्लिकेशन्स, 1995.
5. कान्स जी.जे. हैण्डबुक फार ज्योग्राफी टीचर, लन्दन, मैथून एजुकेशनल लि. 1957.
5. सांग एम. एल., हैण्डबुक फार ज्योग्राफी टीचर, लन्दन, मैथून एजुकेशनल लि. 1974.
7. लांग एण्ड राबर्टसन, टीचिंग आफ ज्योग्राफी लन्दन होनेमैन एजुकेशनल बुक्स लि. 1958.
8. मेस्नी इ.ए., टीचिंग आफ ज्योग्राफी लन्दन, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1952.
9. यूनेस्को, सोर्स बुक फार ज्योग्राफी टीचिंग, लन्दन लांगमेन्स ग्रीन एण्ड को. 1965.
10 वालफोर्ड आर. इडी. यू डाइरेक्शन्स इन ज्योग्राफी टीचिंग, लन्दन लांगमैन को. 1973

नागरिकशास्त्र शिक्षण

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. शिक्षा में नागरिकशास्त्र शिक्षण का स्थान, विषय क्षेत्र, आवश्यकता एवं उपयोगिता को समझ सकेगें।
2. नागरिकशास्त्र का अन्य विषयों से सम्बन्ध तथा इतिहास शिक्षण का उद्देश्य विभिन्न समय के अनुसार समझ सकेगें।
3. नागरिकशास्त्र का पाठ्यक्रम प्रत्यय, निर्माण तथा विभिन्न स्तरों पर वर्तमान पाठ्यक्रम की आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेगें।
4. नागरिकशास्त्र शिक्षण की विभिन्न विधियों का प्रयोग करके उसमें विशेष प्रविधियों का प्रयोग करना सीखेगें।
5. नागरिकशास्त्र शिक्षण में पाठ्य सामग्रियों की उपयोगिता एवं इतिहास शिक्षण में पाठ योजना बनाना सीख सकेगें।
6. नागरिकशास्त्र शिक्षण में मूल्यांकन के आधार पर परीक्षण निर्माण करना सीख सकेगें।

इकाई 1अ.नागरकिशास्त्र शिक्षण– अर्थ, आवश्यकता, महत्व एवं नागरिकशास्त्र विषय का अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध

ब. विद्यालयी स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण का उद्देश्य।

इकाई 2अ. नागरिकशास्त्र पाठ्यक्रम– सम्प्रत्यय एवंनिर्माण के सिद्धान्त।

ब. विभिन्न स्तरों पर लागू नागरिकशास्त्र पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक विश्लेषण।

इकाई 3अ. नागरिकशास्त्र शिक्षण की विधियाँ–व्याख्यान, परिचर्चा विधि, स्रोत विधि, प्रोजेक्ट विधि, विचारावेश प्रक्रिया, अनुरूपित शिक्षण

ब. नागरिकशाास्त्र शिक्षण के लिए पाठयोजना निर्माण, प्रारूप एवं महत्व।

इकाई 4अ. नागरिकशास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग, महत्व।

ब.नागरिकशास्त्र शिक्षण में मूल्यांकन– अर्थ, प्रकार वस्तुनिष्ठ विधि पर आधारित मूल्यांकन के लिए परीक्षण का निर्माण, विश्वसनीयता एवं वैधता निर्धारण।

प्रायोगिक कार्य–निम्नाकिंत में से किंन्ही दो प्रायोगिक कार्यों का सत्रावसान के समय विभाग में करना होगा।

- क. वस्तुनिष्ठ परीक्षण का निर्माण।
- ख. नागरिकशास्त्र विभाग के लिये सहायक सामग्री के रूप में दो चार्ट का निर्माण।
- ग. नवीन राजनीतिक एवं शैक्षिक समस्याओं पर कटिंग का संकलन।
- घ. किसी नवीन राजनीतिक विषय पर निबन्ध–लेखन।

अध्ययन ग्रन्थः

1. वर्मा, रामपाल सिंहः नागरिकशास्त्र शिक्षण, राखी प्रकाशन, आगरा।
2. शुक्ला, विकासः नागरिकशास्त्र शिक्षण, राखी प्रकाशन, आगरा।
3. सिंह, बघेला हेत एवं हरिश्चन्द्रः नागरिकशास्त्र शिक्षण।
4. सिंह, योगेश कुमारः नागरिकशास्त्र शिक्षण।
5. त्यागी, गुरूशरण दासः नागरिकशास्त्र शिक्षण।

अर्थशास्त्र शिक्षण

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. विद्यालयी पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र शिक्षण का स्थान एवं अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों को जान सकेगें।
2. अर्थशास्त्र शिक्षण में शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकेगें।
3. अर्थशास्त्र शिक्षण की पाठयोजना बना सकेगें।
4. अर्थशास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग कर सकेगें।
5. अर्थशास्त्र शिक्षण में मूल्यांकन के आधार पर परीक्षण निर्माण कर सकेगें।

इकाई 1अ. अर्थशास्त्र शिक्षण का तात्पर्य, प्रकृति तथा विषय क्षेत्र, अर्थशास्त्र शिक्षण का विद्यालयी पाठ्यक्रम में स्थान।

ब. अर्थशास्त्र शिक्षण का उद्देश्य एवं महत्व– विभिन्न स्तरों पर अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य ।

इकाई 2अ. अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम– प्रत्यय निर्माण के सिद्धान्त एवं विभिन्न स्तरों पर लागू वर्तमान पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक तथा विश्लेषण, अर्थशास्त्र विषय का अन्य विषयों से सहसम्बन्ध ।

ब. अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियॉ, अनुरूपित शिक्षण, परियोजना विधि, व्याख्यान विधि, परिचर्चा विधि, विचारावेश प्रक्रिया एवं लघु समूह पर आधारित विधियॉ।

इकाई 3अ. अर्थशास्त्र शिक्षण एवं सहायक सामग्रियॉ एवं उनकी उपयोगिता।

ब. अर्थशास्त्र शिक्षण में पाठयोजना– अर्थ, प्रकार एवं महतव।

इकाई 4अ. अर्थशास्त्र में मूल्यांकन विधियॉ, वस्तुनिष्ठ विधि पर आधारित मूल्यांकन के लिए परीक्षणों का निर्माण एवं विश्वसनीयता, वैधता का निर्धारण।

ब. अर्थशास्त्र पुस्तकालय, क्लब।

प्रायोगिक कार्यः

1.अर्थशास्त्र शिक्षण विषय में इकाई परीक्षण निर्मित करना।

2.अर्थशास्त्र से सम्बन्धित नवीन अन्वेषणों एवं घटनाओं पर एक निबन्ध लिखिए।

अध्ययन ग्रन्थ

1. त्यागी, गुरूशरण दास– अर्थशास्त्र शिक्षण ।
2. सिंह, रामपाल– अर्थशास्त्र शिक्षण।
3. पाण्डेय के0पी0– अर्थशास्त्र शिक्षण।
4. सिंह एच0एन0– अर्थशास्त्र शिक्षण।
5. सिंह, आ0पी0– अर्थशास्त्र की रूपरेखा।
6. सत्य देरा, श्री– अर्थशास्त्र की रूपरेखा
7. लेला व श्रीवास्तव– अर्थशास्त्र के सिद्धान्त।

सामान्य विज्ञान शिक्षण

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. विज्ञान के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित कर सकेगें।
2. वैज्ञानिक विधि के अनुप्रयोग से परिचित हो सकेगें।
3. विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों से परिचित हो सकेगें।
4. विज्ञान शिक्षण की नवीन प्रवृत्तियों से परिचित होकर भावी जीवन में प्रयोग कर सकेगें।
5. छात्र प्रायोगिक कार्य के संगठन से परिचित हो सकेगें।
6. छात्र पाठ्यक्रम के स्वरूप से परिचित हो सकेगें।

इकाई 1अ. सामान्य विज्ञान शिक्षण– तात्पर्य, आवश्यकता एवं महत्व।

ब. सामान्य विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य एवं महत्व, विभिन्न स्तरों पर शिक्षण के उद्देश्य। उद्देश्य एवं लक्ष्य में अन्तर। उद्देश्यों का वर्गीकरण।

इकाई 2अ. सामान्य विज्ञान शिक्षण का पाठ्यक्रम– अर्थ, परिभाषा, प्रकार, वर्तमान स्थिति एवं सुझाव पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या में अन्तर।

ब. विज्ञान शिक्षण का अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध।

इकाई 3अ. विज्ञान प्रयोगशाला– प्रयोगशाला संगठन, रूपरेखा, उपकरणों की देखभाल एवं प्रायोगिक कार्यों का संगठन।

ब. सामान्य विज्ञान प्रयोगशाला– विज्ञान पुस्तकालय की संरचना, प्रकार, महत्व एवं विभिन्न प्रकार की गतिविधियॉं।

इकाई 4अ. सामान्य विज्ञान पाठयोजना– तात्पर्य, विशेषताऍं एवं महत्व एवं पाठयोजना सम्बन्धी विभिन्न उपागम।

ब. दृश्य–श्रव्य सामग्री एवं नवीन प्रवृत्तियॉं– दृश्य–श्रव्य सामग्री का अर्थ, वर्गीकरण, विशेषताऍं एवं महत्व, विज्ञान मेला, टोली शिक्षण, कम्प्यूटर सह–अनुदेशन, अभिक्रमित अधिगम एवं ई–लर्निंग।

प्रायोगिक कार्य

1. माध्यमिक स्तर के विज्ञान के पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
3. विज्ञान के क्षेत्र में नवीन अन्वेषण से सम्बन्धित निबन्ध लेखन।

अध्ययन ग्रन्थः

1. रावत, डी. एस. 1999, विज्ञान शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. भूषण, शैलेन्द्र 2002, विज्ञान शिक्षण, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
3. टग्रवाल, वी.पी. 2007, विज्ञान शिक्षण, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
4. सेंगर, एस. 2006, सामान्य विज्ञान शिक्षण, श्री कविता प्रकाशन, जयपुर।
5. शर्मा, सत्यपाल 2007, सामान्य विज्ञान शिक्षण, पदमा प्रकाशन, जयपुर।
6. निगमख डी. एस. 1999, विज्ञान शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
7. मिश्र वृन्दावन 2001, विज्ञान शिक्षण विधि, सर्वोदय साहित्य प्रकाशन, वाराणसी।

जीवविज्ञान शिक्षण

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. जीवविज्ञान से तात्पर्य, क्षेत्र एवं आवष्यकता के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
2. जीवविज्ञान शिक्षण के उद्दश्य को समझ सकेगें।
3. जीवविज्ञान शिक्षण के पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्तो एवं शिक्षण विधियों को स्पष्ट कर सकेगें।
4. जीवविज्ञान शिक्षण सहायक सामग्रियों को विश्लेषित कर सकेगें।
5. जीवविज्ञान प्रयोगशाला, क्लब एवं उद्यान में रूचि ले सकेगें।
6. जीवविज्ञान शिक्षण के लिए पाठयोजना निर्मित कर सकेगें।

इकाई 1अ.जीवविज्ञान का तात्पर्य, विषय क्षेत्र, विद्याालयी पाठ्यक्रम में जीव विज्ञान का स्थान, जीवविज्ञान शिक्षण में आधुनिक प्रवृत्तियॉ, अन्य विषयों के साथ सहसम्बन्ध।

ब.जीवविज्ञान शिक्षा के उद्देश्य एवं महत्व, विभिन्न स्तरों पर शिक्षण के उद्देश्य ।

इकाई 2अ.जीवविज्ञान पाठ्यक्रम प्रत्यय, निर्माण का सिद्धान्त, शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर लागू वर्तमान पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक विश्लेषण ।

ब.जीवविज्ञान शिक्षण की विधियॉ– व्याख्यान विधि, व्याख्यान प्रदर्शन विधि, समस्या समाधान विधि, योजना विधि, ह्यूरिस्टिक विधि, पृच्छा विधि,आगमन–निगमन विधि

इकाई 4अ.जीवविज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन विधियॉ, वस्तुनिष्ठ विधि पर आधारित मूल्यांकन के लिए परीक्षण निर्माण एवं विश्वसनीयता तथा वैधता का निर्धारण।

ब.जीवविज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय एवं क्लब, वनस्पति उद्यान एवं जीवशाला का निर्माण व संरक्षण ।

प्रायोगिक कार्यः

1.जीवविज्ञान से सम्बन्धित एक चार्ट एवं माडल का निर्माण।

2.जीवविज्ञान से सम्बन्धित किसी नवीन खोज पर एक निबन्ध लेखन।

3.जीवविज्ञान से सम्बन्धित विषयवस्तु पर एक इकाई परीक्षण निर्माण।

अध्ययन ग्रन्थः

1. भूषण, शैलेन्द्र 2002, विज्ञान शिक्षण, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
2. माहेश्वरी, किशोर विजेन्द्र, जीवविज्ञान शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो मेरठ।
3. Anderson O. Rager; Teaching Modern Idea of Biology, New teacher's College, Press 1972.
4. Green, T.L; Teaching of Biology in topical Secondary school, Londen, Oxford University Press 1965.
5. N.C.E.R.T.; Preparation and evaluation of text books in Biology 1972.

गृहविज्ञान शिक्षण

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. गृहविज्ञान संबन्धित बौद्धिक शक्तियों का विकास होगा।
2. गृहविज्ञान के विस्तृत अध्ययन क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त होगी।
3. गृहविज्ञान का अन्य विषयों से सम्बन्ध स्थापित कर सकेगें।
4. गृहविज्ञान प्रयोगशाला के विभिन्न उपकरणों की जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
5. गृहविज्ञान शिक्षण के उद्देश्य एवं महत्व को जान सकेगें।
6. गृहविज्ञान के मूल्यांकन की विभिन्न विधियों के बारे में बता सकेगें।

इकाई 1अ. गृहविज्ञान के अध्ययन का औचित्य–स्थापन एवं आवश्यकता गृहविज्ञान का अन्य विषयों से सहसम्बन्ध।

ब.विद्यालयी स्तर पर गृहविज्ञान शिक्षण का उद्देश्य।

इकाई 2अ. गृहविज्ञान पाठ्यक्रम– सम्प्रत्यय एवं निर्माण के सिद्धान्त, विभिन्न स्तरों पर लागू गृहविज्ञान पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक विश्लेषण।

ब. गृहविज्ञान प्रयोगशाला– स्थान, भवन, आवास–निर्माण एवं साजसज्जा की व्यवस्था का आयोजन।

इकाई 3अ. गृहविज्ञान शिक्षण की विधियॉ, वााद–विवाद विधि, प्रयोगशाला विधि, व्याख्यान विधि, प्रोजेक्ट विधि, समस्या समाधान विधि।

ब. गृहविज्ञान की योजनाः वार्षिक योजना, इकाई योजना एवं पाठयोजना, इकाई पाठयोजना प्रारूप एवं विशेषताऍ ।

इकाई 4अ. गृहविज्ञान शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग एवं महत्व, पर्यटन,प्रदर्शनी, मेला – उपयोगिता।

ब. गृहविज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन– अर्थ, प्रकार, वस्तुनिष्ठ विधि पर आधारित मूल्यांकन के लिए परीक्षणों का निर्माण एवं विश्वसनीयता, वैधता का निर्धारण।

प्रायोगिक कार्यः

1. गृहविज्ञान शिक्षण विषय में इकाई परीक्षण निर्मित करना।
2. आन्तरिक सज्जा पर किये जा रहे विभिन्न शोधों पर आधारित निबन्ध लेखन।

अध्ययन ग्रन्थः

1. शॉरी, जी.पी., गृहविज्ञान शिक्षण।
2. सुखिया, एस.पी. एवं मेहरोत्रा, पी.वी. गृहविज्ञान शिक्षण।
3. David winter: Modern home craft.
4. Macmillan Ehelorch: Lesson in Domestic Science.
5. Deolkar, Durga, Science of teaching of Home Science Subject in school.

गणित शिक्षण

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 विद्यालयी पाठ्यक्रम में गणित का स्थान एवं गणित शिक्षण के उद्देश्यों को जान सकेगें।
2 गणित शिक्षण में शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकेगें।
3 गणित शिक्षण की पाठयोजना बना सकेगें।
4 गणित शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग कर सकेगें।
5. गणित में मानकीकृत परीक्षण का निर्माण कर सकेगें।

इकाई 1. विद्यालयी पाठ्यक्रम में गणित का स्थान, गणित का अन्य विषयों से सम्बन्ध गणित शिक्षण का उद्देश्य, गणित पाठ्यक्रम– सम्प्रत्यय एवं निर्माण सिद्धान्त ।

इकाई 2. गणित शिक्षण की विधियॉः संश्लेषण विधि एवं विश्लेषण विधि, आगमन–निगमन विधि, व्याख्यान विधि, ह्यूरिस्टिक विधि एवं योजना विधि।

इकाई 3अ. गणित शिक्षण की पाठ योजना एवं पाठ्य सहायक सामग्रियॉ ।

ब. गणित पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं क्लब।

इकाई 4अ. गणित में मूल्यांकन– वस्तुनिष्ठ विधि पर आधारित मूल्यांकन के लिए परीक्षणों का निर्माण एवं विश्वसनीयता, वैधता का निर्धारण।

प्रायोगिक कार्य – गणित विषय पर आधारित इकाई परीक्षण निर्मित करना एवं उसमें समाहित प्रश्नों का विभेदीकरण मान एवं काठिन्य स्तर ज्ञात करना आवश्यक है।

अध्ययन ग्रन्थः

1. Kumar Sudhir, D.N. Ratnalikar, Teaching of Mathematics, Anmol publication Pvt. Ltd., New Delhi.
2. Vashista, S.R., Curriculum Construction Anmol publication Pvt. Ltd., New Delhi.
3. रावत एम.एस. एवं अग्रवाल मुकुट बिहारी लाल, गणित शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
4. मंगल एस. के., गणित शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली।
5. नेगी जे. एस. एवं रक्षिता, गणित शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

वाणिज्य शिक्षण

उद्देश्यः इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. विद्यालयी पाठ्यक्रम में वाणिज्य शिक्षण का स्थान एवं वाणिज्य शिक्षण के उद्देश्यों को जान सकेगें।
2. वाणिज्य शिक्षण में शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकेगें।
3. वाणिज्य शिक्षण की पाठयोजना बना सकेगें।
4. वाणिज्य शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग कर सकेगें।
5. वाणिज्य शिक्षण में मूल्यांकन के आधार पर परीक्षण निर्माण कर सकेगें।

इकाई 1अ. वाणिज्य शिक्षण का तात्पर्य, प्रकृति तथा विषय क्षेत्र, आवश्यकता एवं उपयोगिता वाणिज्य शिक्षण का विद्यालयी पाठ्यक्रम में स्थान।

ब. वाणिज्य शिक्षण का उद्देश्य एवं महत्व– विभिन्न स्तरों पर वाणिज्य शिक्षण के उद्देश्य ।

इकाई 2अ. वाणिज्य पाठ्यक्रम– प्रत्यय निर्माण के सिद्धान्त एवं विभिन्न स्तरों पर लागू वर्तमान पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक विश्लेषण।

ब. वाणिज्य विषय का अन्य विषयों से सहसम्बन्ध ।

इकाई 3अ. वाणिज्य शिक्षण की विधियॉ, अनुरूपित शिक्षण, परियोजना विधि, व्याख्यान विधि, परिचर्चा विधि, विचारावेश प्रकिया, आगमन–निगमन, संश्लेषण–विश्लेषण विधि, दोहरी खाता प्रणाली।

ब. वाणिज्य शिक्षण पाठसहायक सामग्री– आवश्यकता, प्रकार एवं उपयोगिता, पुस्तकालय, क्लब।

इकाई 4अ. वाणिज्य शिक्षण में पाठयोजना का निर्माण, प्रारूप एवं उपयोगिता।

ब. वाणिज्य में मूल्यांकन विधियॉ, वस्तुनिष्ठ विधि पर आधारित मूल्यांकन के लिए परीक्षणों का निर्माण एवं विश्वसनीयता, वैधता का निर्धारण।

प्रायोगिक कार्यः

1. वाणिज्य शिक्षण विषय में इकाई परीक्षण निर्मित करना।
2. वाणिज्य से सम्बन्धित नवीन अन्वेषणों एवं घटनाओं पर एक निबन्ध लिखिए।

अध्ययन ग्रन्थ

1. त्यागी, गुरूशरण दास– वाणिज्य शिक्षण ।
2. सिंह, रामपाल– वाणिज्य शिक्षण।
3. पाण्डेय, के0पी0– वाणिज्य शिक्षण।
4. सिंह, एच0एन0– वाणिज्य शिक्षण।